मार्क्सवादी दृष्टिकोण
[MARXIST APPROACHES]

अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों की प्रकृति तथा इसमें होने वाले परिवर्तनों एवं उन परिवर्तनों के कारणों को सही रूप में समझने के लिए मार्क्सवादी दृष्टिकोण को समझना आवश्यक है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति एवं संबंधों का आरंभिक स्वरूप कैसा था? वर्तमान में क्या परिवर्तन आए हैं और क्यों? तथा आगामी वर्षों में इसमें किस प्रकार के परिवर्तनों की संभावना है तथा अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के विकास का अंतिम चरण क्या होगा? मार्क्सवादी दृष्टिकोण इन सभी प्रश्नों के उत्तरों को जानने में सहायक है।

मार्क्सवाद के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति एवं संबंध वर्ग संघर्ष का एक इतिहास है, जिसके अंतर्गत धन संपन्न, विकसित एवं पूँजीवादी देशों के द्वारा अविकसित एवं निर्धन देशों का शोषण किया जाता रहा है और संपन्न वर्ग के द्वारा अपने निजी हितों की पूर्ति एवं सुरक्षा के लिए साम्राज्यवाद की नीति अपनाई जाती रही है। मार्क्सवादी दृष्टिकोण के अनुसार श्रमिक वर्ग को किसी सीमा में नहीं बाँधा जा सकता है। इनका अपना एक अलग वर्ग है, अत: विश्व के सभी मजदूरों को एक हो जाना चाहिए। संगठित होने के पश्चात ही वे पूँजीवाद तथा उससे संबंधित बुराइयों को उखाड़ फेंक सकते हैं। मार्क्सवादी दृष्टिकोण की मान्यतानुसार अंतत: साम्यवादी समुदाय का वर्चस्व कायम होगा। इस प्रकार यह दृष्टिकोण अन्य दृष्टिकोणों की अपेक्षा अधिक परिवर्तनवादी है। समाजवादी लेखकों के द्वारा मार्क्सवादी दृष्टिकोण का विशेष रूप से समर्थन किया जाता रहा है। सन् 1917 की बोल्शेविक क्रांति के पश्चात अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के क्षेत्र में इस दृष्टिकोण की लोकप्रियता में वृद्धि हुई है। मार्क्सवादी दर्शन न केवल राष्ट्रीय स्तर पर, अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी धनी एवं निर्धनों के मध्य के संघर्ष की बात करता है तथा इस संघर्ष का अंतिम लक्ष्य अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर साम्यवादी शासन की स्थापना करना है। जिस प्रकार किसी भी राज्य के अंदर पूँजीवादी वर्ग एवं श्रमिक वर्ग के मध्य संघर्ष चलता रहता है, उसी प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी पूँजीवादी राज्यों तथा निर्धन एवं पिछड़े राष्ट्रों के मध्य निरंतर संघर्ष चलता है। अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के क्षेत्र में विकसित देशों के द्वारा अपनी साम्राज्यवादी नीति, युद्ध तथा नव- उपनिवेशवाद आदि के द्वारा गरीब राज्यों का शोषण किया जाता है। मार्क्सवादी दृष्टिकोण की मान्यता अनुसार श्रमिक वर्ग की क्रांतियाँ ही राज्यों में समाजवाद लाएँगी और तब सभी राज्यों में समाजवाद की स्थापना के साथ ही इस युग का अंत हो जाएगा।

समाजवाद से अभिप्राय (Meaning of Socialism)—समाजवाद के अर्थ को लेकर विद्वानों में मतभेद देखने को मिलता है। इसी आधार पर विद्वानों ने अपनी-अपनी परिभाषाएँ प्रस्तुत की हैं, जैसा कि जोड (Joad) लिखते हैं— "समाजवाद एक ऐसे टोप के समान है जिसको प्रत्येक व्यक्ति पहनता है।"[1]

फ्रेड ब्रेमले (Fred Bramley) के अनुसार, "समाजवाद का अर्थ व्यक्तिगत हितों को समाज के हित के अधीन करना है।"[2]

शेफले (Schaffle) के शब्दों में, "समाजवाद का मुख्य उद्देश्य व्यक्तिगत पूँजी को सामाजिक पूँजी में परिवर्तित करना है।"[3]

---

1. "Socialism is a hat which has lost its shape because everybody wears it." —*Joad*
2. "Socialism implies the subordination of the interests of the individual to the interests of the society." —*Fred Bramley*
3. "Socialism is the transformation of private capital into a united collective capital." —*Schaffle*

कोल (Cole) की परिभाषा सर्वमान्य है, वह लिखते हैं, "समाजवाद का अर्थ चार संबंधित बातों से है– समस्त व्यक्तियों का भ्रातत्व जिसमें वर्ग भेद का अस्तित्व नहीं; एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था जिसमें कोई भी व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक धनी न हो; चाहे अधिक धनी हो या अधिक निर्धन, वे सभी समानता के आधार पर एक दूसरे से मिल सके; संपूर्ण उत्पादन के साधनों पर सामूहिक स्वामित्व तथा समस्त व्यक्तियों को अपनी पूर्ण क्षमता के अनुसार दूसरे की सेवा करना है।"[1]

समाजवाद के विभिन्न भेद हैं जैसे कि, साम्यवाद (Communism), समष्टिवाद (Collectivism), विकासवादी समाजवाद (Evolutionary Socialism), फेबियनवाद (Fabianism), श्रेणी समाजवाद (Guild Socialism), सिंडिकेटवाद (Syndicateism) आदि।

मार्क्सवादी दृष्टिकोण का सैद्धांतिक आधार
(THEORETICAL BASIS OF MARXIAN APPROACH)

मार्क्सवादी राजदर्शन को समझने के लिए उसके प्रमुख सिद्धांतों को समझना आवश्यक है–

1. **द्वन्दात्मक भौतिकवाद** (Dielectric Materialism)– मार्क्स पर हीगल के दर्शन का प्रभाव पड़ा था। वह हीगल के द्वन्दात्मक भौतिकवाद के सिद्धांत से प्रभावित था, किंतु दोनों के विचारों में कुछ अंतर भी था जैसे कि हीगल विचारों को वास्तविक मानता था, जबकि मार्क्स ने पदार्थ को वास्तविक माना। मार्क्स ने हीगल के द्वन्दवाद को संशोधित रूप में ही स्वीकार किया। हीगल के द्वारा भाव पद्धति या आध्यात्मिक विचार को महत्व देने के कारण मार्क्स उसे कल्पनावादी बताता है। **एंजेल्स** के शब्दों में, "मार्क्स ने हीगल के द्वन्दवाद को जो सर के बल खड़ा था, उसे पैरों के बल खड़ा किया।"[2]

हीगल का विश्वास था कि मनुष्य का सामाजिक विकास अविरल गति से होता है तथा यह विकास द्वन्द्व एवं संघर्ष का परिणाम होता है। प्रत्येक वस्तु के अंदर एक विरोधी तत्व होता है और विरोधी तत्वों में टकराव होने पर ही विकास होता है। इस प्रक्रिया को उसने वाद (Thesis), प्रतिवाद (Anti- thesis) तथा संवाद (Synthesis) के आधार पर समझाने का प्रयास किया है। मार्क्स ने यह सिद्धांत हीगल से ही लिया, किंतु उसमें संशोधन किया। मार्क्स के अनुसार उत्पादन-शक्ति 'वाद' की स्थिति है, उत्पादन-संबंध 'प्रतिवाद' है तथा इन दोनों के संघर्ष के परिणामस्वरूप अस्तित्व में आया नया समाज 'संवाद' है।

2. **वर्ग संघर्ष का सिद्धांत** (Principle of Class Struggle)– मार्क्स के अनुसार प्रत्येक युग में विश्व में दो गुटों का अस्तित्व रहा है– धनी अथवा पूँजीपति वर्ग तथा निर्धन अथवा श्रमिक वर्ग। पूँजीपति वर्ग का उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व होता है जिनका उपयोग वे निजी हित के लिए करते हैं। यह वर्ग साधन-संपन्न होता है। इसके विपरीत निर्धन वर्ग अर्थात श्रमिक वर्ग साधन रहित होता है तथा इन्हीं के श्रम का लाभ पूँजीपतियों के द्वारा प्राप्त किया जाता है तथा इस वर्ग का शोषण भी किया जाता है। इन विरोधी वर्गों के मध्य निरंतर संघर्ष चलता रहता है। जब साधन-संपन्न वर्ग साधन- विहीन वर्ग का शोषण करता है तथा उसे दबाने का प्रयास करता है, तब संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है। मार्क्स का मानना था कि संपूर्ण विश्व में युद्धों तथा महायुद्धों की उत्पत्ति का एकमात्र कारण पूँजीवाद ही है। वर्ग संघर्ष की स्थिति के कारण ही एक सामाजिक व्यवस्था नष्ट होती है तथा उसके स्थान पर दूसरी सामाजिक व्यवस्था अस्तित्व में आती है। यही इतिहास के निर्माण का भी मूल तत्व है। मार्क्स ने अपनी 'कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो' में लिखा है, "प्राचीन रोम में कुलीन, सरदार, साधारण मनुष्य तथा दास होते थे। मध्य युग में सरदार, जागीरदार, गिल्ड– मास्टर, प्रशिक्षणार्थी एवं सेवक होते थे तथा इन वर्गों की अपनी उपश्रेणियाँ भी होती थीं। मार्क्स जर्मनी का निवासी था उसे अपने इन विचारों के कारण पहले जर्मनी और फिर पेरिस का भी त्याग करना पड़ा। तत्पश्चात मार्क्स ने इंग्लैंड को अपनी विचारधारा के अनुकूल पाया। **कोल** के शब्दों में, "मार्क्स का वर्ग संघर्ष का सिद्धांत इंग्लैंड की तत्कालीन परिस्थितियों पर आधारित है। उस समय इंग्लैंड में बहुत अधिक वृद्धि हो रही थी, पूँजीपति वर्ग दिन-प्रतिदिन धनी होता जा रहा था और श्रमिक वर्ग

---

1. Socialism means four related things- brotherhood of all people in which class distinction does not exist; a social system in which no person is richer than others; weather they are rich or not, they can meet each other on common basis; all people have collective ownership of the means of production and serve each other to the best of their ability." —Cole
2. "Marx set Hegel's dielectics,which is put on its head, on it... —Engels